आखर हिंदी पत्रिका ; e-ISSN-2583-0597 खंड 4/अंक 1/ मार्च 2024
Received: 16/03/2024; Accepted: 20/03/2024; Published: 24/03/2024

सुशासन का महत्व

लकी शर्मा
बी.कॉम, तृतीय सेमेस्टर
सुरना कॉलेज

लकी शर्मा, **सुशासन का महत्व**, आखर हिंदी पत्रिका, खंड 4/अंक 1/ मार्च 2024, (75-78)

कौटिल्य अर्थशास्त्र में राजा के गुणों को बताते हुए लिखा है की राजा की ख़ुशी प्रजा की ख़ुशी में निहित है और उनके कल्याण में राजा अपना कल्याण समझता है, जिससे उसे खुद को ख़ुशी मिलती है उसे वह अच्छा नहीं समझता बल्कि जिस किसी भी बात से प्रजा को ख़ुशी मिलती है वह उसे उत्तम समझता है ।अतः शासन अगर अच्छा हो सुशासन हो तो राजा को ख़ुशी मिलती है क्योंकि 'गुड गवर्नन्स' में जनता की ख़ुशी निहित है।

'शासन' शब्द में 'सु' उपसर्ग लग जाने से 'सुशासन' शब्द का जन्म होता है। 'सु' उपसर्ग का अर्थ शुभ, अच्छा, मंगलकारी आदि भावों को व्यक्त करने वाला होता है। राजनीतिक और सामाजिक जीवन की भाषा में सुशासन की तरह लगने वाले कुछ और बहुप्रचलित-घिसे पिटे शब्द हैं जैसे - प्रशासन, सुशासन, अनुशासन आदि। इन सभी शब्दों का संबंध शासन से है। 'शासन' आदिम युग की कबीलाई संस्कृति से लेकर आज तक की आधुनिक मानव सभ्यता के विकास क्रम में अलग-अलग विशिष्ट रूपों में प्रणाली के तौर पर विकसित और स्थापित होती आई है। इस विकास क्रम में परंपराओं से अर्जित ज्ञान और लोक कल्याण की भावनाओं की अवधारणा प्रबल प्रेरक की भूमिका में रही है। इस अर्थ में शासन की सभी प्रणालियाँ कृत्रिम हैं। इस प्रकार हम कह सकते है कि सुशासन व्यक्ति को भ्रष्टाचार एवं लालफीताशाही से मुक्त कर प्रशासन को स्मार्ट बना सकता है।[1]

सुशासन दिवस भारत में प्रतिवर्ष पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की जयंती के रूप में 25 दिसंबर के दिन मनाया जाता है। सरकार में जवाबदेही के भारतीय लोगो के बीच जागरूकता को बढ़ावा देकर प्रधानमंत्री वाजपेयी को सम्मानित करने के लिए 2014 में सुशासन दिवस की स्थापना की गई थी। भारत के तीन बार के

प्रधानमंत्री थे। वे पहले 16 मई से 1 जून 1996 तक , तथा फिर 1998 में और 19 मार्च 1999 से 22 मई 2004 तक भारत के प्रधानमंत्री रहे। वे कवि , पत्रकार एवं प्रखर प्रवक्ता थे। [1,2]

यूएनडीपी के अनुसार, " सुशासन, अन्य बातों के अलावा, सहभागी, पारदर्शी और जवाबदेह है।" यह प्रभावी और न्यायसंगत भी है और यह कानून के शासन को बढ़ावा देता है। सुशासन यह सुनिश्चित करता है कि राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक प्राथमिकताएँ समाज में व्यापक सहमति पर आधारित हों और विकास संसाधनों के आवंटन पर निर्णय लेने में सबसे गरीब और सबसे कमजोर लोगों की आवाज सुनी जाए ।

अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आई.एम.एफ) ने इस अवधारणा को " एक व्यापक अवधारणा के रूप में परिभाषित किया है जिसमें किसी देश को कैसे शासित किया जाता है, इसके सभी पहलुओं को शामिल किया गया है, जिससे उनकी आर्थिक नीतियाँ, नियामक ढांचा और कानून के शासन का पालन शामिल है "। आई.एम.एफ ने मुख्य रूप से दो क्षेत्रों की अवधारणा को बढ़ावा देने पर बहुत जोर दिया है:

- सार्वजनिक क्षेत्र के संस्थानों को कवर करने वाले सुधारों के माध्यम से सार्वजनिक संसाधनों का प्रबंधन और
- निजी क्षेत्र की गतिविधियों के लिए अनुकूल पारदर्शी और स्थिर आर्थिक और नियामक वातावरण का विकास और रखरखाव।

किसी राज्य में **सुशासन का महत्व** बहुत अधिक है। सुशासन के बिना सतत विकास संभव नहीं है।

- **<u>आर्थिक विकास</u>**

किसी राज्य में सुशासन के बिना उस राज्य का आर्थिक विकास स्थिर नहीं होता है। आर्थिक विकास के सभी तत्व, जैसे उत्पादन, वितरण, निवेश और यहां तक कि उपभोग, विभिन्न बाधाओं का सामना करते हैं। यदि सुशासन स्थापित हो जायेगा तो ऐसी बाधाएँ दूर हो जाएगी और राज्य के संसाधनों का उचित वितरण संभव हो सकेगा।

- **<u>सामाजिक विकास</u>**

सामाजिक विकास के लिए अनुशासन आवश्यक है। इसकी भूमिका केवल आर्थिक विकास तक ही समाप्त नहीं हो जाती। विकास का परिणाम यह सुनिश्चित करता है कि समाज में हर वर्ग के लोगों को निष्पक्षता का आधार प्राप्त हो। एक समाज में विभिन्न धर्मों, जातियों और वर्गों के लोग रहते हैं। अब यदि इन सभी लोगों के बीच धन का उचित वितरण नहीं होगा तो सामाजिक असंतोष बढ़ेगा।

फिर, धन का उचित वितरण ही पर्याप्त नहीं है। हमें ऐसी व्यवस्था करनी होगी कि अल्पसंख्यक लोग बिना डरे चल सके. उसी प्रकार समाज में पुरुषों और महिलाओं के बीच अंतर को कम करने के लिए विभिन्न सुधार कानून बनाने होंगे।

- **राजनीतिक विकास**

राजनीतिक विकास से इसका रिश्ता काफी महत्वपूर्ण है. यदि किसी देश के राजनीतिक नेता सुशासन स्थापित करने के लिए सक्रीय नहीं हैं, तो उस देश में इसकी स्थापना संभव नहीं है। इसकी सफलता काफी हद तक राजनीतिक नेतृत्व की ईमानदारी और राजनीतिक प्रतिष्ठा के नियमों और विनियमों के पालन पर निर्भर करती है।

राजनीतिक संस्थाओं और राजनीतिक दलों के बीच रचनात्मक सहयोग और जनता के कल्याण के लिए कार्यक्रमों का निर्माण आपस में अच्छी प्रतिस्पर्धा और सुशासन स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उदाहरण के लिए, लोकतंत्र में सरकार और विपक्ष के बीच आपसी सहयोग से देश में स्थापित करने में मदद करता है।

निष्कर्ष

शासन का प्रभावी कामकाज देश के प्रत्येक नागरिक की प्रमुख चिंता है। नागरिक राज्य द्वारा दी जाने वाली अच्छी सेवाओं के लिए कीमत चुकाने को तैयार हैं, लेकिन जिस चीज की आवश्यकता है वह एक पारदर्शिता, जवाबदेही और समझदार शासन प्रणाली है जो पूर्वाग्रहों और पूर्वाग्रहों से बिल्कुल मुक्त है।देश में सुशासन बहाल करने के लिए 'अंत्योदय' के गांधीवादी सिद्धांत को प्राथमिकता देने के लिए हमारी राष्ट्रीय राजनीति में सुधार करने की आवश्यकता है। भारत को शासन में ईमानदारी विकसित करने पर भी ध्यान देना चाहिए, जो शासन को और अधिक नैतिक बनाएगा।

सरकार को सबका साथ, सबका विकास और सबका विश्वास के आदर्श पर काम करना जारी रखना चाहिए जिससे समावेशी और सतत विकास होगा।

जब किसी राज्य में सुशासन स्थापित हो जाता है तो उसकी कुछ विशेषताओं से लोग इसका अंदाजा आसानी से लगा सकते हैं। तब भागीदारी, कानून का शासन, पारदर्शिता, जवाबदेही, सर्वसम्मति उन्मुख, समानता और समावेशन, प्रभावशीलता और दक्षता और जवाबदेही जैसी अनुशासन की विशेषताओं को आसानी से देखा जा सकता है।

राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक विकास के लिए सुशासन है। सुशासन और विकास एक दूसरे के पूरक हैं। यह नस्ल, धर्म, जाति या लिंग की परवाह किए बिना नागरिकों के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक अधिकारों की रक्षा करता है। परिणामस्वरूप, किसी देश का विकास सूचकांक ऊपर जाने लगता है।

संदर्भ

1. भारत में वितीय अंतरण - last updated 26-2-2024 Available from www.drishtiias.com/hindi/-accessed on 10-3-2024
2. Shubham Singh - सुशासन पर दस वाक्य - last updated on September 2023 Available from www.hindikiduniya.com

****